मणिकर्णिका

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1 चिनगारी- बचपन, विवाह और युद्ध की दस्तक

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 लक्ष्मीबाई का असली नाम 'मणिकर्णिका' था। लोग प्यार से उन्हें मनु कहकर बुलाते थे।

उत्तर-2 मणिकर्णिका एक प्रसिद्ध घाट है, जो वाराणसी के काशी शहर में स्थित है। ये घाट इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई का नाम इसी घाट के नाम पर रखा गया था।

उत्तर-3 माँ पार्वती ने अपने कान का आभूषण गंगातट पर एक कुंड में छिपा दिया था और भगवान शंकर से उसे ढूंढने के लिए कहा था। लेकिन वो आभूषण आज तक नहीं मिला। ऐसी मान्यता है कि जिसका भी दाह-संस्कार यहाँ होता है, उससे भगवान शिव इस खोए हुए कर्णाभूषण के बारे में पूछते हैं।

उत्तर-4 मणिकर्णिका को बचपन में 'मनु' और 'छबीली' नाम से जाना जाता था।

उत्तर-5 मणिकर्णिका की माँ का नाम भागीरथीबाई और पिता का नाम मोरोपंत तांबे था।

उत्तर-6 मनु बचपन में तलवारों, भालों और अन्य ऐसे ही शास्त्रास्त्रों से खेला करती थी।

उत्तर-7 काल्पनिक युद्धों का अभ्यास, युद्धों में की जाने वाली व्यूहरचनाओं का अभ्यास, किलेबंदी, शत्रुओं को चकमा देना, तलवार चलाते हुए दाँतो में लगाम दबाकर घोड़े को साधना, ये उनके प्रिय खेल थे।

उत्तर-8 नाना द्वारा हाथी पर बैठाए जाने से मना करने की बात मनु ने अपने पिता से कही। पिता ने मनु तो समझाते हुए कहा कि 'बेटा, हम सामान्य लोग हैं। नाना पेशावर परिवार के हैं। उनके पास हाथी हैं इसलिए वे उसकी सवारी कर सकते हैं।'

उत्तर-9 मनु का विवाह मई, 1842 में झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ।

उत्तर-10 विवाह के बाद मनु का नाम भगवती लक्ष्मी के नाम पर लक्ष्मीबाई रखा गया।

उत्तर-11 लक्ष्मीबाई और गंगाधर राव के पुत्र का नाम दामोदर राव था।

उत्तर-12 गंगाधर राव के दत्तक पुत्र का नाम आनंद राव था। बाद में आनंद राव का नाम बदलकर दामोदार राव रखा गया।

उत्तर-13 मनु के पिता मराठों के पेशवा बाजीराव द्वितीय के भाई चिमनजी अप्पा के सलाहकार थे।

उत्तर-14 अप्पा जी मराठों के पेशवा बाजीराव द्वितीय के भाई थे। अप्पा जी की मृत्यु के बाद मनु के पिता बिठूर आ गए और बाजीराव द्वितीय के दरबार के सदस्य बन गए।

उत्तर-15 झाँसी के राजपरिवार के इष्टदेव भगवान गणेश और कुलदेवी महालक्ष्मी थी।

उत्तर-16 गंगाधर राव एक कुशल शासक थे। गंगाधर के समय में झाँसी की सुख-संपदा में काफी वृद्धि हुई थी। इसलिए प्रजा गंगाधर राव से बहुत प्रेम करती थी।

उत्तर-17 रानी लक्ष्मीबाई मानती थीं कि महिलाओं को सशक्त, सक्षम और स्वाभिमानी होना चाहिए। महल में रहते हुए उन्होंने अन्य महिलाओं में भी इसी भावना को जिंदा रखा।

उत्तर-18 महल की अन्य महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए रानी ने महिला सैन्य टुकड़ी तैयार करके उन्हें सैन्य-प्रशिक्षण दिया। साथ ही रानी ने इन महिलाओं को घुड़सवारी और तलवारबाजी में भी प्रशिक्षित किया।

उत्तर-19 ईस्ट इंडिया कंपनी को लिखे पत्र में गंगाधर ने अनुरोध करते हुए कहा कि उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को उनका उत्तराधिकारी माना जाए और झाँसी राज्य के शासन का अधिकार जीवनपर्यंत उनकी पत्नी रानी लक्ष्मीबाई को दिया जाए।

उत्तर-20 झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई द्वारा महल में तैयार की गई महिला सैनिकों की टुकड़ी का हिस्सा थी। झलकारी बाई कोरी जाति से थी, जिनका जीवन पारंपरिक व्यवसाय हथकरघे पर कपड़े बनाना होता था। झलकारी बाई की देहाकृति और चेहरा रानी से कुछ मिलता जुलता था।

उत्तर-21 झलकारी बाई बचपन से ही साहसी थीं। एक बार कुछ डकेतों ने उनके गांव के व्यापारी पर हमला कर दिया था। झलकारी ने डकेतों को मुंहतोड़ जवाब देते हुए उन्हें गांव से भागने पर मजबूर कर दिया था।

उत्तर-22 मेजर मालकम एक ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट थे। उन्होनें रानी के बारे में लिख था- 'रानी का अत्यंत सम्मान किया जाता है और मुझे विश्वास है कि वे एक शासक का उत्तरदायित्व भली प्रकार से निभाने में समर्थ हैं'।

उत्तर-23 रानी ने ब्रिटिश वकील जॉन लैंग से सलाह ली थी। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई द्वारा ईस्ट इंडिया कपंनी के आदेश के विरुद्ध दायर की गई अपील को निरस्त कर दिया गया था।

उत्तर-24 सेना में एक अपवाह तेजी से फैलने लगी कि सेना में जिन नए कारतूसों का प्रयोग प्रारंभ हुआ है, वह गाय और सूअर की चरबी का प्रयोग करते हुए बनाए गए हैं। ब्रिटिश सेना में हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म के लोग थे। यही कारण था कि ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों में असंतोष उभरने लगा और वह कारतूस के प्रयोग को लेकर भड़क उठे।

उत्तर-25 "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी"-यह रानी लक्ष्मीबाई ने कहा था। क्योंकि ईस्ट इंडिया कंपनी ने रानी को वसीयत से बेदखल करते हुए झाँसी को कंपनी में मिला लिया था। रानी को 60,000 रुपये सालाना की पेंशन दी गई और उन्हें कंपनी की ओर से आदेश दिया गया कि वह किले को खाली कर दें।

उत्तर-26 विद्रोह की शुरुआत झाँसी शहर से हुई, जहाँ विद्रोही सैनिकों ने झोकनबाग क्षेत्र में रानी लक्ष्मीबाई की बात को ना मानते हुए अंग्रेजों की हत्या कर दी थी।

उत्तर-27 झोकनबाग क्षेत्र में हुई अंग्रेजों की हत्या का जिम्मेदार रानी लक्ष्मीबाई को ठहराया गया क्योंकि अंग्रेजों का मानना था कि रानी ने विद्रोही सिपाहियों को धन देकर उनकी मदद की है। जिसके बाद उन्होंने झाँसी पर अधिकार करने और रानी को सबक सिखाने की ठान ली।

2 झाँसी के किले और शासन-व्यवस्था का संक्षिप्त इतिहास

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 वेत्रवती को बेतवा नदी के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर-2 झाँसी का पुराना नाम बलवंत नगर था।

उत्तर-3 ओरछा के शासक बीरसिंहजू देव ने झाँसी के किले का निर्माण कराया था।

उत्तर-4 बीरसिंहजू ने ओरछा में अपने महल की छत पर जतारा के राजा को अपने बनाए हुए किले की ओर इशारा करते हुए पूछा की 'आपको वहाँ कुछ दिखाई दे रहा है?' जतारा के राजा ने उत्तर देते हुए कहा कि 'कोई झाईं-सी (परछाई) दिख तो रही है। 'यही झाईं-सी शब्द बिगड़कर झाँसी बन गया और इसी स्थान को बाद में झाँसी के नाम से जाना गया।

उत्तर-5 बीरसिंहजू देव एक चतुर शासक थे।

उत्तर-6 मुगल शहनशाह जहाँगीर के साथ बीरसिंहजू देव के संबंध काफी मधुर थे। अकबर के विरुद्ध विद्रोह के समय शहनशाह की सहायता करते हुए उनके ही निर्देश पर बीरसिंहजू देव ने अकबर के विश्वासपात्र अबुल फ़ज़ल फैजी की हत्या करवा दी थी।

उत्तर-7 झाँसी के किले में प्रवेश करने के लिए कुल दस द्वाार बनाए गए हैं।

उत्तर-8 बुंदेलखंड के एक अन्य प्रसिद्ध शासक छत्रसाल के समय में झाँसी मराठों के नियंत्रण में आया था। मोहम्मद खान बंगश के खिलाफ युद्ध में मराठों ने महाराज छत्रसाल की सहायता की थी। जिसके बाद छत्रसाल ने आभार व्यक्त करते हुए झाँसी मराठों को सौंप दी थी।

उत्तर-9 रानी महल और महालक्ष्मी मंदिर का निर्माण रघुनाथ राव नेवलकर ने कराया था।

उत्तर-10 गंगाधर राव के पूर्ववर्ती शासक उनकी तरह कुशल नहीं थे। इन शासकों की अक्षमताओं के कारण झाँसी की स्थिती प्रत्येक दृष्टि से बहुत खराब हो चुकी थी। और प्रजा में भी असंतोष की स्थिती पैदा हो गई थी।

उत्तर-11 रामराजा मंदिर वेत्रवती नदी के किनारे बसी प्राचीन नगरी ओरछा में स्थित है। ओरछा का रामराजा मंदिर एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ श्री राम को राजा के रूप में मान्यता प्राप्त है और दिन में तीन बार रामराजा सरकार को शासन की ओर से बंदूकधारी सिपाही द्वारा सलामी दी जाती है।

3 समाज व सेना में असंतोष व विद्रोह की शुरुआत

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 हिंदू और मुसलमानों के संबंध मधुर थे। वर्षों से साथ रहते हुए हिंदू और मुसलमान एक-दूसरें की संवेदनाओं को समझने लगे थे और उनमें पारस्परिक सद्भाव पनप चुका था।

उत्तर-2 अंग्रेज सत्ता के मद में अंधे होकर भारतीय जन समुदाय को घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। स्थानीय लोगों का अधिकाधिक शोषण होने लगा था। अंग्रेजों की बढ़ती क्रूरता और अन्याय के विरुद्ध जनता का आक्रोश बढ़ने लगा था।

उत्तर-3 अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी ने कई राज्यों को हड़प लिया था। कंपनी के अधीन होने के बाद राज्यों के सैकड़ों परिवार और उनके हजारों आश्रित अचानक बेरोजगार हो गए थे। नमक पर भी कर लगा दिया गया था। यही कारण था कि राज परिवार अंग्रेजों से नाराज थे।

उत्तर-4 सर चार्ल्स नेपियर ने कहा था कि यदि उन्हें गवर्नर जनरल बना दिया जाए, तो वह सबसे पहला काम ईसाई धर्म को राज्यधर्म घोषित करने का करेंगे।

उत्तर-5 लाला हनवंत सहाय एक महान क्रांतिकारी थे। अंग्रेजों ने उन्हें हार्डिंग बम कांड का षड्यंत्र रचने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया था।

उत्तर-6 लाला हनवंत सहाय के दादा ने सपना देखा था कि जब लाल किले की दीवार के ठीक ऊपर नया चाँद दिखाई देगा, तब लाल किले का आँगन फिरंगियों के खून से सराबोर हो जाएगा। उस सपने में यह चेतावनी भी थी कि यदि वह बहता हुआ खून यमुना नदि तक पहुँच गया, तो अंग्रेज फिर से हावी हो जाएंगे।

उत्तर-7 कंपनी द्वारा सेना में प्रयुक्त किए गए नए कारतूस एनफील्ड राइफल के लिए थे। इन कारतूसों को लेकर खास बात ये थी कि इनका प्रयोग दांतों से ग्रीस किए गए कारतूस को फाड़कर किया जाता था।

उत्तर-8 कारतूसों को लेकर ये समाचार फैल रहा था कि इन कारतूसों को बनाने के लिए गाय और सूअर की चरबी का प्रयोग किया गया है।

उत्तर-9 परिस्थितिजन्य साक्ष्यों से ये बात सिद्ध थी कि अंग्रेज सभी भारतीयों को तुच्छ समझते थे और उनके धर्म को हेय अर्थात घृणा की दृष्टि से देखते थे।

उत्तर-10 कारतूसों का प्रयोग करने से पहले उन्हें दाँतो से काटना पड़ता था। अफवाह फैल चुकी थी कि कारतूसों में गाय और सूअर की चरबी का प्रयोग किया गया है। हिंदुओं के लिए गाय पूज्य थी, अथवा मुसलमान भी सूअर की चरबी को मुँह से लगाने के बारे में सोच

भी नहीं सकते थे। इसलिए हिंदू और मुसलमान, दोनों ही कारतूसों का विरोध कर रहे थे।

उत्तर-11 क्रांति का संदेश फैलाने के लिए रोटी और कमल के प्रतीकों का सहारा लिया गया। हर छावनी में रोटी और कमल पहुँचाए जाने लगे थे।

उत्तर-12 क्रांति ने सबसे पहले बलि मेरठ के मंगल पांडे की ली। अपने अधिकारियों पर गली चलाने और तलवार से हमला करने के बाद मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लिया गया।

4 लक्ष्मीबाई के सहयोगी

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 झलकारी बाई का जन्म झाँसी के समीप भोजला गाँव में 22 नवंबर, 1830 में हुआ था।

उत्तर-2 झलकारी बाई ईंधन के लिए लकड़ियाँ लेने जंगल में जाया करती थी। एक दिन जंगल में झलकारी बाई का सामना तेंदुए से हो गया। झलकारी ने अपनी कुल्हाड़ी से ही उस तेंदुए का काम तमाम कर दिया था। इसी छटना की तुलना शेरशाह सुरी से की जाने लगी।

उत्तर-3 झलकारी बाई स्वयं लक्ष्मीबाई की ही भाँति निडर और साहसी थी। झलकारी की माँ बचपन में ही स्वर्ग सिधार गई थी। पिता द्वारा बचपन में ही झलकारी को युद्धकला और शास्त्रास्त्र संचालन की शिक्षी दी गई थी। झलकारी का विवाह भी सैनिक के साथ हुआ था। इसलिए उनकी परिस्थितियाँ रानी से मिलती जुलती थी।

उत्तर-4 झलकारी बाई की मुलाकात रानी से गौरी पूजन के अवसर पर हुई। झलकारी अन्य महिलाओं के साथ रानी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उनके पास गई थी। जहाँ प्रथम बार रानी ने झलकारी बाई को देखा था।

उत्तर-5 झलकारी बाई के बारे में जानकर और उनकी बहादुरी के किस्से सुनकर रानी ने झलकारी को अपनी दुर्गा सेना में शामिल होने के लिए कहा।

उत्तर-6 रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना का नाम दुर्गा सेना था।

उत्तर-7 रानी लक्ष्मीबाई के तोपखाने का प्रमुख तोपची गुलाम गौस खान था।

उत्तर-8 रानी लक्ष्मीबाई की महिला तोपची का नाम मोतीबाई था।

उत्तर-9 गुलाम गौस खान की तोप के निशाने पर जो मोरचा था, उसके समीप कुछ मंदिर थे। वह मंदिरों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था। गौस खान ने ये सूचना रानी को देते हे कहा- 'महारानी साहिबा, सामने कुछ मंदिर हैं। मेरी पूरी कोशिश है और मुझे यकीन है कि मंदिरों को इंशाअल्लाह कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा, लेकिन फिर भी एहतियातन आपका आगाह करना जरूरी समझा हूँ'।

उत्तर-10 खुदाबख्श रानी का विश्वासपात्र पठान सैनिक था। वह जन्मभूमि के प्रति भी काफी वफादार था। वह एक ऐसा इंसान था जो सच बोलने में झिझकता नहीं था। इसी आदत की वजह से खुदाबख्श को राजा गंगाधर राव के गुस्से का शिकार होना पड़ा था।

उत्तर-11 रानी लक्ष्मीबाई की महिला साथी पुरुषों से भी दो कदम आगे थी। उनकी हिम्मत एवं बहादुरी पुरुषों में हीन भावना उत्पन्न कर देती थी। इसलिए रानी लक्ष्मीबाई की महिला साथियों को पुरुषों के बराबर बताना अपमान बताया गया है।

उत्तर-12 मोतीबाई की तोप का नाम 'भवानीशंकर' था जबकि गुलाम गौस खान की तोप का नाम 'कड़क बिजली' था।

5 झाँसी की लड़ाई

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 किले में छिपे अंग्रेजों ने जब रानी से मदद माँगी तो रानी ने अंग्रेजों को किले से बाहर आकर झाँसी में आने की सलह दी। ताकि कोई उन्हें नुकसान ना पहुँचा सके।

उत्तर-2 रानी उनकी सहायता करने की स्थिती में इसलिए नहीं थी क्योंकि उनके पास उस समय बहुत ही छोटी-सी अंगरक्षक सेना थी।

उत्तर-3 रानी ने विद्रोहियों से वचन लिया की वह झाँसी में किसी निर्दोष को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।

उत्तर-4 किले में छिपे अंग्रेजों के बाहर निकलते ही विद्रोहियों ने झोकनबाग क्षेत्र में उन सबकी निर्मम हत्या कर दी।

उत्तर-5 झाँसी के डिप्टी कलेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में झोकनबाग हत्याकांड के लिए रानी को जिम्मेदार ठहराया जबकि सागर कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट में रानी द्वारा बताए गए घटनाक्रम से अपनी समहती प्रकट की और रानी का समर्थन किया।

उत्तर-6 दतिया और ओरछा के झाँसी पर आक्रमण से आने वाली कठिन परिस्थितियों के संकेत मिल रहे थे।

उत्तर-7 दतिया और ओरछा के आक्रमण के बाद रानी को अपने रणकौशल को निखारने, किले को मजबूत करने और सेना को तैयार करने का अवसर मिल गया।

उत्तर-8 दीपावली के अवसर पर महालक्ष्मी मंदिर नें पूजन और सार्वजनिक भोज हुआ, जिसमें हिंदू और मुसलमानों, दोनों ने भाग लिया। इसकी मुख्य बात यह थी कि रानी स्वयं अपने हाथ से भोजन परोसा करती थीं।

उत्तर-9 जनरल रोज का रवैया अत्यंत निर्मम और क्रूर था। उनके मन में स्थानीय निवासियों के प्रति घृणा भरी हुई थी।

उत्तर-10 किसी के भी पकड़े जाने पर जनरल रोज का सवाल होता था, क्या इस शख्स को पकड़े जाते समय इसके हाथ में हथियार था? हाँ का जवाब मिलने पर वह सीधे गोली मारने का आदेश सुना दिया करता था।

उत्तर-11 रानी लक्ष्मीबाई की सेना में कुल 14 हजार सैनिक थे।

उत्तर-12 रानी की सेना में कुछ ऐसे सैनिक थे जो अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह में भाग ले चुके थे और अपने मोर्चों पर विद्रोह का दमन हो जाने के बाद रानी की सेना में शामिल हुए थे।

उत्तर-13 रानी की ओर से घोषणापत्र 14 फरवरी को जारी किया गया। इस घोषणापत्र में हिंदू और मुसलमान राजाओं को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट होने के लिए कहा गया।

उत्तर-14 अंग्रेजों ने 149 विद्रोहियों को पंक्तिवद्ध करके गोली से उड़ा दिया।

उत्तर-15 अंग्रेजों की ओर से रानी को आत्मसमर्पण करने का संदेश देते हुए मार्च 21, 1958 को किले की घेराबंदी शुरु की गई।

उत्तर-16 रानी ने गुलाम गौस खान पर पूरा भरोसा जताते हुए उन्हें निडर होकर गोलीबारी जारी रखने के लिए कहा।

उत्तर-17 तात्या टोपे की सेना के साथ अंग्रेजों की ज़बरदस्त मुठभेड़ बेतवा नदी के किनारे पर हुई।

उत्तर-18 झाँसीवाले अंग्रेजों की भारी गोलाबारी का डटकर सामना कर रहे थे। इस गोलाबारी में सामान्य नागरिक और सैनिक भी मारे गए लेकिन इसके बावजूद झाँसीवालों के उत्साह में कोई कमी नहीं दिख रही थी। किले की दीवारों में जरूर कहीं ना कहीं दरार दिख जाती थी, परंतु झाँसी के साहस और उत्साह में कोई दरार नजर नहीं आ रही थी।

उत्तर-19 झाँसी के किले में प्रवेश करने के लिए अंग्रजों ने ऐसे व्यक्ति की तालाश की जो धन के लालच में आकर अपनी जन्मभूमि के साथ विश्वासघात करने के लिए तैयार हो सके। इसके लिए ओरछा दरवाज़े पर द्वार की सुरक्षा के लिए तैनात दूल्हाजू को लालच दिया गया।

उत्तर-20 3 अप्रैल, 1858 को सुबह के लगभग तीन बजे के समय अंग्रेजों ने नगर में प्रवेश किया।

उत्तर-21 रानी के वीर सैनिक और सेनापति मारे जा चुके थे। अंग्रेजों के विरुद्ध सेना को पुनः संगठित करने के लिए लक्ष्मीबाई ने झाँसी से निकलने का निर्णय लिया।

उत्तर-22 झलकारी बाई की शक्ल रानी लक्ष्मीबाई से काफी मिलती-जुलती थी। अंग्रेजों से युद्ध के समय झलकारी बाई ने स्वयं को रानी की भाँति सुसज्जित कर लिया और उनके जैसी वेशभूषा अपनाकर अंग्रेजी फौज के सामने जा पहुँची। जिसके चलते अंग्रेजों में भ्रम की स्थिती उत्पन्न हो गई और रानी झाँसी से निकल पाने में कामयाब हुई।

उत्तर-23 झलकारी बाई को पागल कहे जाने के बाद हयू ने कहा था 'यदि भारतीय महिलाओं में एक प्रतिशत भी इस लड़की की तरह पागल हा जाएँ, तो हमें अपना बोरिया-बिस्तरा बाँधना पड़ जाएगा।'

उत्तर-24 झलकारी बाई की मृत्यु को लेकर बहुत से लोगों का कहना है कि उसे तोप से बाँधकर उड़ा दिया गया। कुछ लोगों का ये भी कहना है कि उसे छोड़ दिया गया। उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा के अनुसार झलकारी की मृत्यु अत्यंत वृद्धावस्था में हुई थी।

उत्तर-25 रानी को झाँसी में ना पाकर अंग्रेजों ने झाँसी की गलियों में लूटमार और हत्याएँ करनी शुरू कर दी। चार दिनों तक झाँसी में कत्लेआम जारी रहा। जो अंग्रेजों के सामने आया, उसे मार दिया गया।

उत्तर-26 झाँसी ने निकलकर रानी सीधे कालपी की ओर बढ़ चली।

उत्तर-27 झलकारी बाई को उन्नाव दरवाजे की रक्षा में तैनात अपने पति पूरन कोरी के वीरगती को प्राप्त होने का हृदयविदारक समाचार मिला।

उत्तर-28 रानी लक्ष्मीबाई कालपी इसलिए जाना चाहती थी क्योंकि कालपी में नाना साहब, तात्या टोपे आदि अन्य क्रांतिकारी योद्धा उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

6 रानी बढ़ी कालपी आई

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 झाँसी के खजाने का प्रयोग सेना को तैयार करने के लिए किया जाना था।

उत्तर-2 लेफ्टिनेंट डॉकर ने भांडेर में रानी को घेरने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप डॉकर रानी की तलवार से घायल होकर घोड़े से नीचे गिर गया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

उत्तर-3 कोंच में रानी के गुरु राम मंदिर के महंत थे।

उत्तर-4 कोंच में अंग्रेजों के साथ युद्ध में रानी के विश्वसनीय मीर खाँ पिंडारे को वीरगति की प्राप्ति हुई थी।

उत्तर-5 कोंच में भी रानी को ना पकड़ पाने की खीझ अंग्रेजों ने स्थानीय जनता पर अत्याचार करके उतारी।

उत्तर-6 रानी को कालपी पहुँचने में चौबीस घंटों का समय लगा।

उत्तर-7 तात्या टोपे ने आसपास के राजा-रजवाड़ों को पत्र लिखते हुए कहा कि यह संघर्ष किसी को गद्दी पर बैठाने या गद्दी से उतारने के लिए नहीं है बल्कि अपनी स्वायत्ता को बनाए रखने और फिरंगियों को खदेड़ने के लिए है।

उत्तर-8 अंग्रेजों को यमुना पार करके किले तक पहुँचने से रोकने के लिए क्रांतिकारियों ने यमुना नदी में चलने वाली दो सौ नावों को अपने नियंत्रण में ले लिया था। ताकि अंग्रेजों के पास किले तक पहुँचने का कोई भी साधन उपलब्ध ना हो।

उत्तर-9 कालपी में हथियार बनाने का काम किले के ही एक तहखाने में किया जाता था।

उत्तर-10 कालपी में रानी लक्ष्मीबाई के अतिरिक्त तात्या टोपे, नाना साहब और बाँदा के नवाब जैसे क्रांतिकारी थे।

उत्तर-11 कालपी में सभी क्रांतिकारियों ने यमुना का पवित्र जल हाथ में लेकर संकल्प लिया कि अंतिम साँस तक संघर्ष की आग को धीमा नहीं पड़ने देंगे।

उत्तर-12 10 हजार योद्धा 12 तोपों के साथ अंग्रेजों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार बैठे थे।

उत्तर-13 क्रांतिकारियों के कड़े प्रतिरोध के अलावा 40 डिग्री से अधिक का तापमान अंग्रेजों की हिम्मत का इम्तिहान ले रहा था।

उत्तर-14 हयूरोज़ ने लगातार 20 घंटे तक कालपी के किले पर गोले बरसाए।

उत्तर-15 हयूरोजड़ को कालपी में रानी लक्ष्मीबाई के छिपे होने का पूरा विश्वास था।

उत्तर-16 23 मई को अंग्रेजी सेना ने कालपी के किले में प्रवेश किया।

उत्तर-17 कालपी ने निकलने के बाद रानी और उसके साथियों ने ग्वालियर का रूख किया।

उत्तर-18 ग्वालियर की राजसत्ता और क्रांतिकारियों में सबसे बड़ा अंतर यह था कि क्रांतिकारी और उनके साथी अपने स्वाभिमान के लिए जान देने के लिए तैयार थे, जबकि सिंधिया को फिरंगियों के बल पर अपनी जान बचाने के लिए लड़ना था।

7 ग्वालियर विजय

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 रानी के साथ नाना साहब, तात्या टोपे, और बाँदा के नवाब थे।

उत्तर-2 ग्वालियर के किले का बहुत अधिक रणनीतिक महत्त्व था। क्रांतिकारियों को लगता था कि इस किले पर अधिकार कर लेने से उनकी स्थिती बहुत सशक्त हो जाएगी। इसलिए वह किले पर अधिकार करना चाहते थे।

उत्तर-3 ग्वालियर के शासक का नाम जयाजीराव सिंधिया था।

उत्तर-4 ग्लावियल किले का खजांची अमरचंद बांठिया था। उसे खुलकर क्रांतिकारियों की सहायता की और राजकोष से आवश्यक धन भी उन्हें उपलब्ध कराया।

उत्तर-5 सिंधिया के सैनिकों की सहानुभूति रानी लक्ष्मीबाई और अन्य विद्रोहियों के साथ थी।

उत्तर-6 ग्वालियर पर विजय पाने की खुशी में नाना साहब की पेशवाई की घोषणा की गई। विजयोत्सव मनाया गया और नृत्य-संगीत के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसलिए नाना साहब ने अपने साथियों के साथ मिलकर दरबार सजाया।

उत्तर-7 रानी लक्ष्मीबाई को शाही खजाने से एक बहुमूल्य मोतियों का हार उपहार में दिया गया।

उत्तर-8 रानी लक्ष्मीबाई जानती थी कि अभी युद्ध होना बाकी है। ह्यूरोज किसी चोटिल सर्प की भाँति गुस्से में भरा अपनी सेना के साथ आ रहा होगा। वह किसी भी तरह ग्वालियर को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहती थी। इसलिए रानी को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था।

उत्तर-9 रानी का सबसे भरोसेमंद घोड़ा मारा गया था। इसलिए रानी ने अपने लिए अस्तबल से एक अच्छे घोड़े का प्रबंध करने के लिए कहा।

8 अंतिम युद्ध

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए रानी ने पूर्व की ओर का मोरचा सँभाला।

उत्तर-2 लक्ष्मीबाई का पुराना घोड़ा युद्ध में मारा जा चुका था। रानी ने जब अपने नए घोड़े को देखा तो उन्हें समझ आ गया था कि ये घोड़ा युद्ध के मतलब का नहीं है।

उत्तर-3 "वह झाँसी की रानी जा रही है। उसे पकड़ो।" - ऐसा रॉड्रिक ने कहा था।

उत्तर-4 रानी नाला इसलिए पार नहीं कर पाई क्योंकि रानी का घोड़ा एक ही जगह अड़ गया था। कई प्रयासों के बाद भी रानी का घोड़ा टस से मस नहीं हुआ।

उत्तर-5 राइफल की एक गोली अचानक रानी की कमर में लग गई थी। कमर से निकलते हुए खून को हाथ से दबाकर बंद करने के प्रयास के चलते रानी को अपने बाएँ हाथ की तलवार फेंकनी पड़ी।

उत्तर-6 रानी के सीने में संगीन भौंकने वाले सैनिक का सिर कटकर जमीन पर गिर गया था।

उत्तर-7 सिर पर तलवार से वार करने वाले अंग्रेज का मुँहतोड़ जवाब देते हुए रानी ने उस अंग्रेज को नीचे गिरा दिया और वह धोड़े की गर्दन पर लटक गई।

उत्तर-8 घायल रानी को पास में ही बने एक आश्रम में लाया गया।

उत्तर-9 आश्रम में रहने वाले महात्मा का नाम बाबा गंगादास था।

उत्तर-10 रानी ने अपने साथियों को अंतिम आदेश देते हुए कहा की फिरंगी मेरे शरीर को छूने ना पाएँ।

उत्तर-11 अंग्रेजों को रानी की मृत देह की भस्म ही हाथ लगी।

9 असफल क्रांति के परिणाम

प्रश्न-अभ्यास

उत्तर-1 रानी की मृत्यु के बाद तात्या टोपे को फाँसी दे दी गई, परंतु नाना साहब बच निकलने में सफल रहे थे।

उत्तर-2 लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपंत तांबे को झाँसी से निकलते समय दतिया के पास से पकड़ लिया गया था। बाद में उन्हें भी फाँसी दे दी गई।

उत्तर-3 इस असफल क्रांति के बाद भारत में ब्रिटेन की माहारानी का शासन हो गया।

उत्तर-4 रानी विक्टोरिया की घोषणा में निम्नलिखित वादे किए गए-

क. भारत में अंग्रेजों के राज्य को और नहीं बढ़ाया जाएगा। जितना हो चुका, वही पर्याप्त है।

ख. रियासतों के अधिकारों का सम्मान किया जाएगा। कंपनी ने देसी रियासतों के साथ जो भी समझौते किए हैं, वे सब मान्य होंगे।

ग. सबको अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता होगी और इसमें शासन का हस्तक्षेप नहीं होगा।

घ. विद्रोह में भाग लेने वाले उन सभी को क्षमा कर दिया जाएगा, जिन पर किसी अंग्रेज की हत्या का आरोप है।

उत्तर-5 राष्ट्रीय चेतना के विकास से अभिप्राय उस उदय से है, जिसने विद्रोह के बाद पूरे राष्ट्र को एकजुट कर दिया था।

उत्तर-6 अंग्रेजों ने हिंदू-मुस्लिम समुदाय के बीच भेद उत्पन्न करने के लिए उनके साथ ऐसा व्यवहार करना शुरु कर दिया था जिससे ऐसा लगे कि वे हिंदुओं का पक्ष ले रहे हैं और मुसलमानों की उपेक्षा कर रहे हैं। परिणामस्वरूप दोनों समुदाय के बीच नफरत का भाव उत्पन्न हो गया।

उत्तर-7 विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने सभी तोपखानों को भारतीयों के नियंत्रण से दूर कर दिया। भारतीय सैनिकों की संख्या घटाकर आधी कर दी गई। अंग्रेजी सैनिकों की संख्या में वृद्धि कर दी गई। साथ ही भारतीय सैनिकों की तैनाती उनके क्षेत्र से मीलों दूर कर दी गई।

उत्तर-8 जैसे अंग्रेजी शासन का शोषक स्वरूप उजागर होता गया, जन-आक्रोश भी बढ़ता गया।

उत्तर-9 द्विराष्ट्रवादी सिद्धांत का दुष्परिणाम यह हुआ की अखंड भारत के पूर्व और पश्चिम में दो अलग-अलग खंड निकालकर एक नया देश बनाया गया, जिसका नाम था पाकिस्तान।

उत्तर-10 भारत को स्वतंत्रता 15 अगस्त, 1947 को मिली।